९६. विकसित चेतना-३

१५-०९-१३

विकसित चेतना अपने में तीन प्रमाण के रूप में होता है | तीनों प्रमाण अविभाज्य रहते हैं | जब कभी भी जागृत चेतना में मानव जीना होता है, तीनों प्रकार से प्रमाणों को प्रमाणित करता है | यही तीन प्रमाण अखण्डता, सार्वभौमता का आधार है | इसके पहले से जितने भी प्रकार से जिया, जीवों से अच्छा जीने के लिये हुआ | जीवों से अच्छा जीने में आहार, आवास,अलंकार, दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन इन छः मुद्दे पर विशेष विकास हुआ | बाकी सब नकारात्मक हुआ | जैसा युद्ध के लिये विकास हुआ तकनीकी का | निरर्थक सिद्ध हुआ | निरर्थकता का स्वरूप धरती को बर्बाद करने में ही हुआ | धरती बर्बाद होने के बाद मानव कहाँ रहेगा? यही प्रश्न आया था | इसी प्रश्न का समाधान के लिये विकल्प प्रस्तुत हुआ | बिना भ्रम, बिना अपराध जीना कैसा होगा? उसका विकल्प व्यवहारिक, वैचारिक, अनुभवमूलक विधियों से प्रस्तुत किया है | यही तीन प्रमाण हैं | प्रमाण का मतलब परम्परा | ये कभी भी विभाजित होते नहीं | जब कभी भी होगा साथ-साथ ही होगा | सर्वदेश काल में जब कभी भी विकसित चेतना प्रमाणित होगा, तीनों प्रमाण साथ में ही होगा |

इसको अच्छी तरह से परिशीलन किया है | परिशीलन का मतलब है सोचा है | पवित्रता के अर्थ में सोचना, पवित्रता को बनाए रखना तीन प्रमाण से अधिक होता नहीं, कम होता नहीं | इन तीन प्रमाण से अधिक कुछ चाहत मानव का बनता नहीं | सकारात्मक पक्ष में सोचने से यही निकला | यदि हम और कुछ चाहते हैं, बनता ही नहीं | इसे अच्छी तरह से सोचा गया, समझा गया, तब संसार के लिये बताया गया | बताने के मूल में कोई व्यक्तिवाद, समुदायवाद का पुट नहीं है | व्यक्तिवाद में कोई न कोई एषणा की तृप्ति का पक्ष है | इसमें एषणा पक्ष की तृप्ति का कोई कार्यक्रम नहीं है | अथ से इति तक परम्परा के अर्थ में है | परम्परा मानव जात तक है | अभी तक ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में होना देखा गया | इसी क्रम में चलता हुआ आदमी जात समुदाय चेतना से छूटा नहीं | समुदाय कल्पना से मुक्ति पाने के लिये विकल्प रखा है | विकल्प विधि से ही समुदाय चेतना से मुक्त, अखण्ड समाज चेतना से युक्त होना होता है | इसमें एषणा त्रय से वित्तेषणा, पुत्रेषणा गौण होता है | यश के लिये काम करना बनता है | यश जीवन से सम्बंधित है | जीवन प्रधान विधि से विकसित चेतना पूर्वक जीना होता है | विकसित चेतना ही तीन प्रमाणों के रूप में प्रमाणित होता है |

अनुभव प्रमाण समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व रूप में प्रमाणित होता है | प्रमाण आचरण के रूप में होता है | आचरण समझदारी के आधार पर होता है | इन सभी बातों को अच्छी तरह से समझने के बाद संसार के सम्मुख विकल्प रूप में प्रस्तुत किया है | शनैः शनैः मानव इसे समझ सकता है | मुझे इसे पाने के लिये ३० वर्ष का साधना करना पड़ा | साधना में लक्ष्य सहित अथवा लक्ष्य के अर्थ में साधना करना रहा | मेरे साथ लक्ष्य यही रहा कि सर्वमानव सुखी होने का विधि क्या है? अभी तक मानव कर्म के आधार पर जाति को पहचाना है | ज्ञान के आधार पर पहचानना आवश्यक है | मानव जात ज्ञानावस्था में होना पहचाना | ज्ञान का स्वरूप को सह-अस्तित्व रूप में ही पहचाना | सह-अस्तित्व में ही जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण को पहचाना, जी कर प्रमाणित किया तब संसार को बताया | इसमें किसी का निंदा, स्तुति का बात ही नहीं है | अच्छे आदमी सब मानवीयता के पक्ष में ही काम किए हैं | सारे अच्छे आदमी धरती पर सभी देश काल में हुये हैं | ऐसा मेरा स्वीकृति है | अच्छाई का पता नहीं लगा, अच्छा आदमी होना स्वीकारा | अच्छाई पता लगने का मतलब शिक्षा में, व्यवस्था में, आचरण

में, प्रमाण में देखने को नहीं मिला | इसी व्याकुलतावश अनुसंधान हुआ | अनुसंधान कर्म के आधार पर विकल्प प्रस्तुत हुआ | इस क्रम में स्वार्थ का कोई बात नहीं रहा | समुदाय चेतना का कोई बात नहीं रहा | जो कुछ भी बात रही अर्थात शोध और अनुसंधान ही रहा | सब का सब सर्वमानव के अर्थ में ही रहा | सर्वमानव एक जाति होने, सर्वमानव में एक धर्म होने का स्वरूप को अनुसंधान विधि से समझा, तब विकल्प को प्रस्तुत किया | सर्वमानव जात एक होना अखण्ड समाज के रूप में ही होता है | अखण्ड समाज समझदारी के अर्थ में ही होता है | समझदारी के आधार पर ही समाधान, समृद्धि को पाता है | फलस्वरूप तीनों आचरण कर पाता है | सर्वदेश कालीय मानव, विचार विधि से प्रमाणित होना तब नियम, नियंत्रण, संतुलन को भी आचरण में लाना होगा | इसे देव चेतना नाम दिया | दिव्य चेतना में न्याय, समाधान, समृद्धि को बताया गया है |

न्याय चेतना को सम्बंध, मूल्य, मूल्यांकन के रूप में समझाया और प्रमाणित किया | मनुष्य ही ज्ञानावस्था में समझ में आने से यह सुगम हो गया | मानव का स्पष्टीकरण सुलभ हो गया | इसी क्रम में मानव, देव मानव, दिव्य मानव स्वरूप भी स्पष्ट हुई | तीनों चेतना का ज्ञान, आचरण, एवं प्रमाण स्पष्ट कर चुके हैं | ये मानव का ही स्पष्टीकरण है | दिव्य मानव का प्रमाण ही समाधान, समृद्धि, अभय सह-अस्तित्व रूप में होता है क्योंकि सह-अस्तित्व में ही जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण को पहचाना रहता है | इस क्रम में मानव अपने वरीयता को पहचान सकता है | वरीयता का मतलब, धरती को स्वस्थ बनाए रखने में अधिकार सम्पन्नता को वरीयता नाम दिया है | इस विधि से मानव ज्ञानावस्था का इकाई होने के आधार पर ज्ञान सम्पन्न रहना आवश्यक हो गया | ज्ञान के बारे में विभिन्न समुदायों में भिन्न प्रकार से ज्ञान को बताया गया है | वो सब का सब जाति और कर्तव्यों के आधार पर बताया गया है | आध्यात्मवाद को चार आश्रम, चार वर्ण के आधार पर बताया गया है | शुरुआत ही आठ भाग में हुआ | सब का कर्तव्य, दायित्य, कार्य, व्यवहार, आचरण को बताया गया है |

ये सब बताते हुये कर्म के आधार पर जातियों का निर्माण किया | अध्यात्म में मानव जात में ब्राह्मण को वरीय माना | इसे विराट पुरुष का मुखारविंद से निष्पन्न होने का बात कहा | प्रमाण शून्य रहा | यही मुख्य बात रही हमें सोचने की | हमें समझ में नहीं आने से अनुसंधान हुआ | अनुसंधान विधि से ही विकल्प प्रस्तुत हुआ | विकल्प ही अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन हुआ | मानव केंद्रित चिंतन ही सह-अस्तित्ववाद हुआ, मध्यस्थ दर्शन हुआ | इस ढंग से दर्शन, शास्त्र, विचार प्रस्तुत हुआ | इसी को विकल्प कहा है | विकल्प विधि से ही मानवता को पहचान सकते हैं | विकल्प ही मानव का आधार है | हमसे पूछा जाता है, इसके अलावा और भी चिंतन हो सकता है | आवश्यकता पड़ने पर होगा, ऐसा मैं कहता हूँ | चिंतन को रोकने वाला कौन होता है | हर मनुष्य चिंतनशील है | ऐसा हमारा मान्यता है | इसी आधार पर सर्वमानव सुखी होना पहचाना | सर्वमानव सुखी होने के लिये व्यवहार, सोच, विचार, व्यवस्था और अनुभव को स्पष्ट किया है | इस विधि से मानवीयतापूर्ण आचरण, व्यवस्था, प्रमाण तीनों बात स्पष्ट किया | यही विकल्प है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)